4 बिहारीलाल

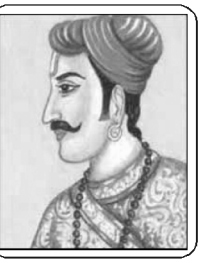

रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि बिहारीलाल का जन्म सन् 1603 ई० के लगभग ग्वालियर के पास बसुआ गोविन्दपुर गाँव में हुआ था। ये माथुर चौबे कहे जाते हैं। इनका बचपन बुन्देलखण्ड में व्यतीत हुआ। युवावस्था में ये अपनी ससुराल मथुरा में जाकर रहने लगे—

''जन्म ग्वालियर जानिए, खण्ड बुंदेले बाल।
तरुनाई आई सुघर, मथुरा बसि ससुराल।।''

जयपुर के मिर्जाराजा जयसिंह के आप आश्रित कवि थे। जयपुर में रहकर ही इन्होंने अपने एकमात्र ग्रन्थ **'बिहारी सतसई'** की रचना की, जिसमें सात सौ उन्नीस दोहे हैं। राजा जयसिंह बिहारी का बड़ा सम्मान करते थे। वे इनको प्रत्येक दोहे पर एक स्वर्ण-मुद्रा पुरस्कार रूप में देते थे। कहा जाता है कि महाराजा जयसिंह अपनी नवोढ़ा पत्नी के साथ प्रेम-पाश में लिप्त थे और राज-काज का पूर्णतः परित्याग कर चुके थे। यह दशा देखकर बिहारी ने एक ऐसा दोहा लिखकर भेजा कि जयसिंह पुनः कर्त्तव्य-पथ पर अग्रसर हो गये। बिहारी की मृत्यु सन् 1663 ई० में हुई थी।

कवि-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म–**सन् 1603 ई०।
- **जन्म-स्थान–**बसुआ गोविन्दपुर (ग्वालियर)।
- **पिता–**पं. केशवराय चौबे।
- **मृत्यु–**सन् 1663 ई०।
- **रचना-**बिहारी सतसई।
- **भाषा-**प्रौढ़ एवं परिमार्जित ब्रज।
- **शैली-**मुक्तक।

बिहारी ने किसी लक्षण-ग्रन्थ की रचना नहीं की, फिर भी काव्य-रचना करते समय इनका ध्यान काव्यांगों पर रहा। सतसई के अनेक दोहे रसों और अलङ्कारों के उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किये जा सकते हैं। ये रीतिकाल के श्रेष्ठ कवियों में गिने जाते हैं। भक्ति, नीति तथा ऋतु वर्णन भी इनके काव्य के विषय रहे पर प्रधानता प्रेम और शृंगार की है। 'बिहारी सतसई' मुक्तक काव्य रचना है जिसमें मुक्तक काव्य की सारी विशेषताएँ विद्यमान हैं। बिहारी ने लगभग 750 दोहों की रचना की। बिहारी ने दोहा जैसे छोटे छन्द का प्रयोग कर विस्तृत अर्थ की सफल अभिव्यञ्जना की है। किसी-किसी दोहे में भी अभीष्ट अर्थ ग्रहण करने के लिए काव्य-परम्परा की समूची पृष्ठभूमि के ज्ञान की आवश्यकता होती है।

बिहारी ने साहित्यिक ब्रज भाषा तथा मुक्तक शैली का प्रयोग किया है। भाषा में शब्द-योजना तथा वाक्य-रचना बड़ी अव्यवस्थित है। कहीं-कहीं उस समय के प्रचलित अरबी-फारसी के शब्दों का भी इन्होंने प्रयोग किया है।

केवल एक छोटे-से ग्रन्थ की रचना करके बिहारी साहित्य-जगत् में अमर हो गये। इनकी सतसई बड़ी लोकप्रिय हुई। इसकी अनेक टीकाएँ लिखी गयीं। कई कवियों ने इनके दोहों पर आधारित अन्य छन्दों की रचना की है। निस्सन्देह बिहारी ने 'गागर में सागर' भर दिया है। इनके दोहे सीधे हृदय पर प्रहार करते हैं। इनके दोहों के विषय में निम्नलिखित उक्ति प्रसिद्ध है—

''सतसैया के दोहरे, ज्यों नावक के तीर।
देखन में छोटे लगैं, घाव करैं गम्भीर।।''

भक्ति

मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।
जा तन की झाँईं परै स्यामु हरित-दुति होइ।।1।।
मोर-मुकुट की चंद्रिकनु यौं राजत नँदनंद।
मनु ससि सेखर की अकस किय सेखर सत चंद।।2।।
सोहत ओढ़ै पीतु पटु, स्याम सलौनै गात।
मनौ नीलमनि सैल पर, आतपु पर्‌यौ प्रभात।।3।।
अधर धरत हरि कै परत, ओठ-डीठि-पट-जोति।
हरित बाँस की बाँसुरी, इन्द्रधनुष रंग होति।।4।।
या अनुरागी चित्त की गति समुझै नहिं कोइ।
ज्यौं ज्यौं बूड़े स्याम रंग त्यौं-त्यौं उज्जलु होइ।।5।।
तौ लगु या मन-सदन मैं हरि आवैं किहिं बाट।
विकट जटे जौ लगु निपट खुटैं न कपट-कपाट।।6।।
जगतु जनायौ जिहिं सकलु, सो हरि जान्यौ नाँहि।
ज्यौं आँखिनु सबु देखियै, आँखि न देखी जाँहि।।7।।
जप, माला, छापा, तिलक, सरै न एकौ कामु।
मन-काँचै नाचे वृथा, साँचे राँचै रामु।।8।।

नीति

दुसह दुराज प्रजानु कौं, क्यों न बढ़ै दुख-दंदु।
अधिक अँधेरौ जग करत, मिलि मावस, रबि चंदु।।9।।

बसै बुराई जासु तन, ताही कौ सनमानु।
भलौ भलौ कहि छोड़ियै, खोटैं ग्रह जपु दानु।।10।।

नर की अरु नल-नीर की, गति एकै करि जोइ।
जेतौ नीचो ह्वै चलै, तेतौ ऊँचौ होइ।।11।।

बढ़त-बढ़त संपति-सलिलु, मन सरोजु बढ़ि जाइ।
घटत-घटत सु न फिरि घटै, बरु समूल कुम्हिलाइ।।12।।
जौ चाहत, चटक न घटै, मैलौ होइ न मित्त।
रज राजसु न छुवाइ तौ, नेह-चीकनो चित्त।।13।।

बुरौ बुराई जौ तजै, तौ चितु खरौ डरातु।
ज्यौं निकलंकु मयंकु लखि गनैं लोग उतपातु।।14।।

स्वारथु सुकृतु, न श्रमु बृथा, देखि, बिहंग बिचारि।
बाज, पराऐं पानि परि, तूँ पच्छीनु न मारि।।15।।

('बिहारी-सतसई' से)

॥ अभ्यास प्रश्न ॥

1. निम्नलिखित दोहों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए तथा काव्य-सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए—

(क) मेरी भव-बाधा ..... दुति होइ।

(ख) अधर-धरत ..... रंग होति।

(ग) जप माला ..... राँचै रामु। **(2019AE)**

(घ) जौ चाहत, चटक ..... नेह-चीकनो चित्र। **(2017AD)**

(ङ) बढ़त-बढ़त ..... कुम्हिलाइ। **(2017AD)**

(च) स्वारथु सुकृतु ..... पच्छीनु न मारि।

(छ) या अनुरागी चित्त की ..... कपट-कपाट।

(ज) बसै बुराई जासु ..... तेतौ ऊँचौ होइ। **(2016CB,CC)**

(झ) दुसह दुराज ..... ग्रह जपु-दानु। **(2016CC)**

(ञ) जगतु जनायौ जिहिं ..... न देखी जाँहि। **(2019AE)**

(ट) नर की ..... ऊँची होइ। **(2016CB)**

(ठ) बुरौ बुराई .....उतपातु। **(2018HA,20MG)**

2. बिहारीलाल का जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए।

अथवा बिहारी लाल का जीवन-परिचय दीजिए तथा उनकी किसी एक रचना का नाम लिखिए। **(2016CA,CB,CE,CG, 17AA,AF,18HF,19AE,20MD,MB,MF)**

3. बिहारी की रचनाओं एवं साहित्यिक परिचय का उल्लेख कीजिए।

4. बिहारी का जीवनवृत्त लिखकर उनके साहित्यिक योगदान का उल्लेख कीजिए।

5. बिहारीलाल की जीवनी का उल्लेख करते हुए उनकी रचनाओं एवं काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

6. श्रीकृष्ण की 'हरित बाँस की बाँसुरी' इन्द्रधनुष के रंगोंवाली क्यों हो जाती है?

7. 'श्याम रंग में डूबने से चित्त उज्ज्वल हो जाता है।' विरोधाभास को स्पष्ट कीजिए।

8. किसी राज्य की प्रजा का दुःख कब बढ़ जाता है? बिहारी ने अपने कथन की पुष्टि में जो दृष्टान्त दिया है, उसको स्पष्ट कीजिए।

9. बिहारी ने मनुष्य की और पानी के नल की दशा को समान क्यों कहा है?

10. 'बुरा व्यक्ति जब बुराई छोड़ देता है, तब हम शंकित हो जाते हैं'—इस भाव की पुष्टि में कवि ने क्या दृष्टान्त दिया है?

11. कविवर बिहारी के काव्य-कौशल पर एक लेख लिखिए।

अथवा बिहारी ने 'गागर में सागर' भर दिया है–इस कथन पर प्रकाश डालिए।

12. निम्नलिखित दोहों में प्रयुक्त अलंकार एवं रस की पहचान कीजिए एवं उनकी परिभाषा दीजिए–

(क) मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागर सोइ।
जा तन की झाईं परै, स्यामु हरित-द्युति होइ।।

(ख) अधर धरत हरि कै परत, ओठ-डीठि-पट-ज्योति।
हरित बाँस की बाँसुरी, इन्द्र धनुष रंग होति।।

➥ आन्तरिक मूल्यांकन

(i) बिहारी की नीति सम्बन्धी दोहों से आप कितना प्रभावित हुए हैं, स्पष्ट कीजिए।

(ii) बिहारी का संक्षिप्त जीवन-परिचय तालिका के माध्यम से दर्शाइए।

टिप्पणी

1. भव-बाधा = सांसारिक बाधाएँ, जो मनुष्य को जीवन-लक्ष्य प्राप्त नहीं करने देतीं। **झाँईं** = प्रतिबिम्ब, झलक। **स्याम** = श्याम वर्ण के श्रीकृष्ण, काला रंग। **हरित दुति** = हरी कान्ति। प्रसन्नवदन राधा के स्वर्णिम (गौर-वर्ण) की झाँईं पड़ने से (i) श्रीकृष्ण प्रसन्न हो जाते हैं, (ii) नीला रंग हरा हो जाता है।

2. चंद्रिकनु = चंद्रिकाओं से, मोर पंख पर चमकते रंगों का जो चन्द्राकार चिह्न होता है उसे चन्द्रिका कहते हैं। **ससि-सेखर** = महादेव जी। **अकस** = ईर्ष्या से। श्रीकृष्ण कामदेव के समान सुन्दर हैं। कामदेव अपने जलानेवाले महादेव को अपना शत्रु समझता है। महादेव के मस्तक पर चन्द्रमा शोभित है, उनसे वैर के कारण मानो कामदेव (श्रीकृष्ण) ने सौ चन्द्रमा अपने मस्तक पर सजा लिये हैं।

3. आतपु = धूप। **सैल** = शैल (पहाड़ी, पर्वत)।

4. पट = पीताम्बर, होंठ की ज्योति लाल, दृष्टि की ज्योति नीली तथा पीताम्बर की ज्योति पीली है। जब हरे रंग की वंशी पर ये सब रंग प्रतिबिम्बित होते हैं तब वह इन्द्रधनुष के समान रंग-बिरंगी हो जाती है।

5. बूड़े स्याम रंग = श्रीकृष्ण के प्रेम में डूबता है। **उज्जलु होइ** = सफेद हो जाता है, पवित्र हो जाता है। इस दोहे में कवि ने यह चमत्कार दिखलाया है कि प्रेम करनेवाले चिह्न को श्याम रंग में डूबकर श्याम वर्ण का ही हो जाना चाहिए, पर वह उज्ज्वल हो जाता है। जब रचना में विरोध के द्वारा इस प्रकार चमत्कार उत्पन्न किया जाता है तो उसे विरोधाभास अलङ्कार कहते हैं। **गति** = दशा।

6. विकट जटे = दृढ़ता से बन्द। **जौ लगु** = जब तक। **निपट** = अत्यन्त। **खुटै** = खुलै। **कपट-कपाट** = कपाटरूपी किवाड़।

7. जगतु जनायौ जिहि सकलु = जिसने समस्त विश्व को पैदा किया है।

8. सरै = सिद्ध होता है। **मन काँचै** = कच्चे मन वाला, जिसके मन में सच्ची भक्ति नहीं। **नाचै** = भटकता है। **साँचे राँचै रामु** = राम तो सच्ची भक्ति वाले से ही प्रसन्न होते हैं।

9. दुःख दंदु = दुःखातिशयता। **मिलि** = एक राशि में आकर। **मावस** = अमावस्या की रात में। **द्वन्द्व** = संघर्ष।

10. खोटैं = खराब। **ग्रह** = नक्षत्र (सूर्य, चन्द्रमा, राहु, केतु आदि)। **सनमानु** = सम्मान।

11. जेतौ नीचो ह्वै चलै = जितना विनम्र होकर चलेगा, जितनी नल की स्थिति नीची होगी उससे जल की धार चलेगी। **तेतौ** = उतना।

12. सम्पति-सलिलु = सम्पत्तिरूपी जल। **मन-सरोजु** = मनरूपी कमल। **समूल** = जड़ सहित।

13. चटक = चमक, चटकीलापन। **रज-राजसु** = रजोगुण रूपी धूल, बड़प्पन की धूल। **नेह चीकनो** = स्नेह से चिकने, तेल से चिकने।

14. गनैं = सम्भावना करते हैं, आशंका करते हैं। **उतपातु** = अमंगल। **मयंकु** = चन्द्रमा।

15. यह अन्योक्ति है। बाज का प्रयोग मिर्जा राजा जयसिंह के लिए किया गया है तथा पच्छीनु का प्रयोग उन राजाओं के लिए किया गया है जिन पर राजा जयसिंह आक्रमण करते थे। **सुकृतु** = पुण्य कार्य। **पानि** = हाथ। **पच्छीनु** = पक्षियों को।

●●